पाठ 2

काकी

(प्रस्तुत कहानी में एक अबोध बालक का अपनी माँ के प्रति गहरा प्रेम प्रकट हुआ है।)

उस दिन बड़े सवेरे श्यामू की नींद खुली तो उसने देखा घर भर में कुहराम मचा हुआ है। उसकी माँ नीचे से ऊपर तक एक कपड़ा ओढ़े हुए कम्बल पर भूमि-शयन कर रही है और घर के सब लोग उसे घेर कर बड़े करुण स्वर में विलाप कर रहे हैं।

लोग जब उसकी माँ को श्मशान ले जाने के लिए उठाने लगे, तब श्यामू ने बड़ा उपद्रव मचाया। लोगों के हाथ से छूटकर वह माँ के ऊपर जा गिरा। बोला, काकी सो रही है। इसे इस तरह उठा कर कहाँ ले जा रहे हो? मैं इसे न ले जाने दूँगा।

लोगों ने बड़ी कठिनाई से उसे हटाया। काकी के अग्नि-संस्कार में भी वह न जा सका। एक दासी राम-राम करके उसे घर पर ही सँभाले रही।

यद्यपि बुद्धिमान गुरुजनों ने उसे विश्वास दिलाया कि उसकी काकी उसके मामा के यहाँ गयी है, परन्तु यह बात उससे छिपी न रह सकी कि काकी और कहीं नहीं ऊपर राम के यहाँ गयी है। काकी के लिए कई दिन लगातार रोते-रोते उसका रुदन तो धीरे-धीरे शान्त हो गया, परन्तु शोक शान्त न हो सका। वह प्रायः अकेला बैठा-बैठा शून्य मन से आकाश की ओर ताका करता।

एक दिन उसने ऊपर एक पतंग उड़ती देखी। न जाने क्या सोचकर उसका हृदय एकदम खिल उठा। पिता के पास जाकर बोला, 'काका, मुझे एक पतंग मँगा दो, अभी मँगादो।'

पत्नी की मृत्यु के बाद से विश्वेश्वर बहुत अनमने से रहते थे। 'अच्छा मँगा दूँगा,' कहकर वे उदास भाव से और कहीं चले गये।

श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था। वह अपनी इच्छा को किसी तरह न रोक सका। एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था। इधर-उधर देखकर उसके पास स्टूल सरका कर रखा और ऊपर चढ़कर कोट की जेबें टटोली।

एक चवन्नी पाकर वह तुरन्त वहाँ से भाग गया। सुखिया दासी का लड़का भोला, श्यामू का साथी था। श्यामू ने उसे चवन्नी देकर कहा, 'अपनी जीजी से कहकर गुपचुप एक पतंग और डोर मँगा दो। देखो अकेले में लाना कोई जान न पाये।'

पतंग आयी। एक अँधेरे घर में उसमें डोर बाँधी जाने लगी। श्यामू ने धीरे से कहा, 'भोला, किसी से न कहो तो एक बात कहूँ।'

भोला ने सिर हिलाकर कहा 'नहीं, किसी से न कहूँगा।'

श्यामू ने रहस्य खोला, 'मैं यह पतंग ऊपर राम के यहाँ भेजूँगा। इसको पकड़ कर काकी नीचे उतरेगी। मैं लिखना नहीं जानता नहीं तो इस पर उसका नाम लिख देता।'

भोला श्यामू से अधिक समझदार था। उसने कहा, 'बात तो बहुत अच्छी सोची, परन्तु एक कठिनाई है। यह डोर पतली है। इसे पकड़ कर काकी उतर नहीं सकती। इसके टूट जाने का डर है। पतंग में मोटी रस्सी हो तो सब ठीक हो जाये।'

श्यामू गम्भीर हो गया। मतलब यह बात लाख रुपये की सुझायी गयी, परन्तु कठिनाई यह थी कि मोटी रस्सी कैसे मँगायी जाय। पास में दाम है नहीं और घर के जो आदमी उसकी काकी को बिना दया-मया के जला आये हैं, वे उसे इस काम के लिए कुछ देंगे नहीं। उस दिन श्यामू को चिन्ता के मारे बड़ी रात तक नींद नहीं आयी।

पहले दिन की ही तरकीब से दूसरे दिन फिर उसने पिता के कोट से एक रुपया निकाला। ले जाकर भोला को दिया और बोला, 'देख भोला, किसी को मालूम न होने पाये। अच्छी-अच्छी दो रस्सियाँ मँगा दे।

एक रस्सी छोटी पड़ेगी। जवाहिर भैया से मैं एक कागज पर 'काकी' लिखवा लूँगा। नाम लिखा रहेगा तो पतंग ठीक उन्हीं के पास पहुँच जायेगी।'

दो घंटे बाद प्रफुल्ल मन से श्यामू और भोला अँधेरी कोठरी में बैठे हुए पतंग में रस्सी बाँध रहे थे। अकस्मात् उग्र रूप धारण किये हुए विश्वेश्वर शुभ कार्य मंे विघ्न की तरह वहँा जा घुसे। भोला और श्यामू को धमका कर बोले- 'तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है?'
भोला एक ही डाँट में मुखबिर हो गया। बोला, 'श्यामू भैया ने रस्सी और पतंग मँगाने के लिए निकाला था।'
विश्वेश्वर ने श्यामू को दो तमाचे जड़कर कहा, 'चोरी सीख कर जेल जायेगा! अच्छा, तुझे आज अच्छी तरह बताता हूँ।'
कहकर कई तमाचे जड़े और कान मलने के बाद पतंग फाड़ डाली। अब रस्सियांे की ओर देखकर पूछा 'ये किसने मँगायी।'
भोला ने कहा, 'इन्होंने मँगायी थी। कहते थे, इससे पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे।'
विश्वेश्वर हतबुद्धि होकर वहीं खड़े रह गये। उन्होंने फटी हुई पतंग उठाकर देखी। उस पर चिपके हुए कागज पर लिखा था .....'काकी'।

-सियारामशरण गुप्त

सियारामशरण गुप्त का जन्म 4 सितम्बर सन् 1895 ई0 को चिरगाँव झाँसी में हुआ। इन्होंने अनेक कविता-संग्रह, उपन्यास और निबन्धांे की रचना की है। इनके उपन्यासों में नारी की सहनशीलता, आदर्श और सरलता है। इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ-'मौर्य विजय', 'दूर्वादल' 'आत्मोत्सर्ग' 'गोद', 'नारी' आदि हैं। 29 मार्च सन् 1963 को इनका देहावसान हो गया।

शब्दार्थ

कुहराम = रोना-पीटना, विलाप। भूमि-शयन = जमीन पर सोना। करुण = दीन। उपद्रव = उत्पात। अग्नि-संस्कार = मृत्यु के बाद शव को अग्नि में जलाना। अनमना = उदास, खिन्न। उत्कंठित = उत्सुक, अधीर। प्रफुल्ल = खिला हुआ, प्रसन्न। उग्र रूप = प्रचंड रूप। मुखबिर = भेद देने वाला, भेदिया। हतबुद्धि = बेसुध, घबराया हुआ।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

'मैं और मेरी माँ' - इस विषय पर संक्षेप में अपने अनुभव/विचार सुनाइए।

विचार और कल्पना

1. पतंग इतनी ऊँचाई तक कैसे उड़ती है, जबकि एक कागज का सादा पन्ना नहीं उड़ता है, कारण स्पष्ट कीजिए।
2. श्यामू लिखना नहीं जानता था, इसलिए वह पतंग पर अपनी काकी का नाम नहीं लिख पाया। आप बताएँ, जो लोग लिखना नहीं जानते हैं, उनको जीवन में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता होगा।
3. आपका मन भी आकाश में उड़ने को होता होगा। पतंग की तरह यदि आप भी उड़ सकंे तो सबसे पहले किस स्थान पर जाना चाहंेगे ? क्यों?
4. पाठ में आपने पढ़ा कि श्यामू ने विवशता में पिता जी की कोट के जेब से पैसे निकाल लिये थे, आपके विचार से ऐसा करना उचित था अथवा अनुचित? कारण भी बताएँ।

कहानी से

1. समूह 'ख' से नामांे को छाँटकर समूह 'क' से सम्बन्धित शब्दों के सम्मुख लिखिए-

'क' 'ख'

श्यामू के पिता - भोला
श्यामू का साथी - जवाहिर
श्यामू के भैया - काकी
श्यामू के साथी की बहन - जीजी
श्यामू की माँ - विश्वेश्वर
श्यामू के साथी की माँ - सुखिया

2. श्यामू ने भोला के सामने कौन-सा रहस्य खोला ?
3. श्यामू ने जवाहिर भैया से कागज पर 'काकी' क्यों लिखवाया ?
4. उड़ती हुई पतंग को देखकर, क्या सोचकर श्यामू का हृदय एकदम खिल उठा ?
5. 'भोला एक ही डाँट में मुखबिर हो गया'। इस वाक्य का क्या तात्पर्य है ?
6. 'रस्सी से पतंग तानकर काकी को राम के यहाँ से नीचे उतारेंगे'। भोला से यह बात सुनकर विश्वेश्वर हतबुद्धि क्यों हो गये ?
7- कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइये।

भाषा की बात

1. 'श्यामू पतंग के लिए बहुत उत्कंठित था।' वाक्य में 'श्यामू' और 'पतंग' संज्ञा शब्द हैं। 'श्यामू' व्यक्तिवाचक और 'पतंग' जातिवाचक संज्ञा है। नीचे लिखे वाक्य में आये संज्ञा पदों को पहचान कर लिखिए तथा उनके भेद बताइए। एक जगह खूँटी पर विश्वेश्वर का कोट टँगा था।

2. जो बुद्धिवाला हो-वाक्यांश के लिए एक शब्द है-'बुद्धिमान'। इसी प्रकार नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए-
(क) जिस पर विश्वास न किया जा सके।
(ख) जिसका स्वर्गवास हो गया हो।
(ग) जो अपने मन को एकाग्र रखता हो।
(घ) वह स्थान जहाँ शव जलाये जाते हों।

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ बताइए और अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -
कुहराम मचना, हृदय का खिलना, चिन्ता का मारा होना, रहस्य खोलना, हतबुद्धि होना
4. 'समझदार' शब्द में 'समझ' संज्ञा है, उसमें 'दार' प्रत्यय लगाकर विशेषण पद बना दिया गया है। संज्ञा शब्दों में दार, इक, इत, ई, ईय, मान तथा वान आदि प्रत्ययों को लगाने से विशेषण शब्द बनता है। नीचे लिखे शब्दों में उचित प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाइए -
बुद्धि, चौकी, उपद्रव, करुण, बल, प्रान्त, उत्कंठा।

इसे भी जानें

"मातृत्व महान गौरव का पद है, संसार की सबसे बड़ी साधना, तपस्या, त्याग और महान विजय है।" -मुंशी प्रेमचन्द

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" - वाल्मीकि रामायण